संसारपावन शिवकवच और उसकी महिमा

भगवान् शिव के निम्न कवच और स्तोत्र को वसिष्ठजी ने कभी गन्धर्वराज को दिया था। शिव का जो द्वादशाक्षर मन्त्र है, वह इस प्रकार है–'ॐ **नमो भगवते शिवाय स्वाहा।**' इस मन्त्र को पूर्वकाल में वसिष्ठजी ने पुष्कर तीर्थ में कृपापूर्वक गन्धर्वराज को प्रदान किया था। प्राचीन काल में ब्रह्माजी ने रावण को यह मन्त्र दिया था और शंकरजी ने पहले कभी बाणासुर को और दुर्वासा को भी उसका उपदेश दिया था। इस मूलमन्त्र से इष्टदेव को नैवेद्य आदि सम्पूर्ण उत्तम उपचार समर्पित करना चाहिये। इस मन्त्र का सर्वसम्मत वेदोक्त ध्यान **'ध्यायेन्नित्यं महेशं.....'**[1] इत्यादि श्लोक के अनुसार है। इष्टदेव की उपर्युक्त मंत्र द्वारा पूजा करने के बाद कवच आदि का पाठ करना चाहिये। एक बार बाणासुर ने शिवजी से इस प्रकार प्रार्थना की–

'महाभाग! महेश्वर! प्रभो! आपने संसारपावन नामक जो कवच प्रकाशित किया है, उसे कृपापूर्वक मुझसे कहिये।' उत्तर में भगवान् महेश्वर बोले–

'बेटा! सुनो, उस परम अद्‌भुत कवच का मैं वर्णन करता हूँ। यद्यपि वह परम दुर्लभ और गोपनीय है तथापि तुम्हें उसका उपदेश दूँगा। पूर्वकाल में त्रैलोक्य–विजय के लिये वह कवच मैंने दुर्वासा को दिया था। जो उत्तम बुद्धिवाला पुरुष भक्तिभाव से मेरे इस कवच को धारण करता है, वह भगवान् की भाँति लीलापूर्वक तीनों लोकों पर विजय पा सकता है।'

संसारपावनस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः।।
ऋषिश्छन्दश्च गायत्री देवोऽहं च महेश्वरः।

1.'ध्यायेन्नित्यं महेशं' इत्यादि श्लोक इस प्रकार हैं –

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
दिव्याकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
रत्नासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं सकलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

'प्रतिदिन महेश्वर का ध्यान करे। उनकी अङ्गकान्ति चाँदी के पर्वत अथवा कैलास के समान है, मस्तक पर मनोहर चन्द्रमा का मुकुट शोभा पाता है, दिव्य वेशभूषा एवं शृङ्गार से उनका प्रत्येक अङ्ग उज्ज्वल–जगमगाता हुआ जान पड़ता है, उनके एक हाथ में फरसा, दूसरे में मृगछौना तथा शेष दो हाथों पर अभय की मुद्राएँ हैं, वे सदा प्रसन्न रहते हैं, रत्नमय सिंहासन पर विराजमान हैं, देवतालोग चारों ओर से खड़े होकर उनकी स्तुति करते हैं। वे बाघम्बर पहने बैठे हैं, सम्पूर्ण विश्व के आदिकारण और वन्दनीय हैं, सबका भय दूर कर देनेवाले हैं, उनके पाँच मुख हैं और प्रत्येक मुख में तीन–तीन नेत्र हैं।

धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।।
पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धिदं कवचं भवेत्।

यो भवेत् सिद्धकवचो मम तुल्यो भवेद् भुवि।।
तेजसा सिद्धियोगेन तपसा विक्रमेण च।।
शम्भुर्मे मस्तकं पातु मुखं पातु महेश्वरः।
दन्तपंक्तिं च नीलकण्ठोऽप्यधरोष्ठं हरः स्वयम्।।
कण्ठं पातु चन्द्रचूडः स्कन्धौ वृषभवाहनः।
वक्षःस्थलं नीलकण्ठः पातु पृष्ठं दिगम्बरः।।
सर्वाङ्गं पातु विश्वेशः सर्वदिक्षु च सर्वदा।
स्वप्ने जागरणे चैव स्थाणुर्मे पातु संततम्।।
इति ते कथितं बाण कवचं परमाद्भुतम्।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपनीयं प्रयत्नतः।।
यत् फलं सर्वतीर्थानां स्नानेन लभते नरः।
तत् फलं लभते नूनं कवचस्यैव धारणात्।।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेन्मां यः सुमन्दधीः।
शतलक्षप्रजप्तोऽपि न मन्त्रः सिद्धिदायकः।। (ब्रह्मखण्ड 19/46-55)

इति श्रीब्रह्मवैवर्ते संसारपावनं नाम शंकरकवचं सम्पूर्णम्।

इस संसारपावन नामक शिवकवच के प्रजापति ऋषि, गायत्री छन्द तथा मैं महेश्वर देवता हूँ। धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के लिये इसका विनियोग है।(विनियोग वाक्य यों समझना चाहिये-'ॐ **अस्य श्रीसंसारपावननामधेयस्य शिवकवचस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो महेश्वरो देवता धर्मार्थकाममोक्षसिद्धौ विनियोगः**')। पाँच लाख बार पाठ करने से यह कवच सिद्धिदायक होता है। जो इस कवच को सिद्ध कर लेता है, वह तेज, सिद्धियोग, तपस्या और बल-पराक्रम में इस भूतल पर मेरे समान हो जाता है।

शम्भु मेरे मस्तक की और महेश्वर मुख की रक्षा करें। नीलकण्ठ दाँतों की पाँत (पंक्ति) का और स्वयं हर अधरोष्ठ का पालन करें। चन्द्रचूड कण्ठ की और वृषभवाहन दोनो कंधों की रक्षा करें। नीलकण्ठ वक्षःस्थल का और दिगम्बर पृष्ठभाग का पालन करें। विश्वेश सदा सब दिशाओं में सम्पूर्ण

अङ्गों की रक्षा करें। सोते और जागते समय स्थाणुदेव निरन्तर मेरा पालन करते रहें।

बाण! इस प्रकार मैंने तुमसे इस परम अद्भुत कवच का वर्णन किया। इसका उपदेश हर व्यक्ति को नहीं कर देना चाहिये, अपितु प्रयत्नपूर्वक इसको गुप्त रखना चाहिये। मनुष्य सब तीर्थों में स्नान करके जिस फल को पाता है, उसे इस कवच को धारण करनेमात्र से पा लेता है। जो अत्यन्त मन्दबुद्धि मानव इस कवच को जाने बिना मेरा भजन करता है, वह सौ लाख बार जप करे तो भी उसका मन्त्र सिद्धिदायक नहीं होता।

इस प्रकार श्रीब्रह्मवैवर्तपुराण में संसारपावन नामक शिवकवच का वर्णन पूरा हुआ।

कवच के उपरान्त मन्त्रराज कल्पवृक्ष-स्वरूप शिवजी का स्तोत्र इस प्रकार है। कवचपाठ के बाद इस स्तोत्र को पढ़ना चाहिये।

ॐ नमः शिवाय।

बाणासुर उवाच-

वन्दे सुराणां सारं च सुरेशं नीललोहितम्।

योगीश्वरं योगबीजं योगिनां च गुरोर्गुरुम्।।
ज्ञानानन्दं ज्ञानरूपं ज्ञानबीजं सनातनम्।
तपसां फलदातारं दातारं सर्वसम्पदाम्।।
तपोरूपं तपोबीजं तपोधनधनं वरम्।
वरं वरेण्यं वरदमीड्यं सिद्धगणैर्वरैः।।
कारणं भुक्तिमुक्तीनां नरकार्णवतारणम्।
आशुतोषं प्रसन्नास्यं करुणामयसागरम्।।
हिमचन्दनकुन्देन्दुकुमुदाम्भोजसंनिभम् ।
ब्रह्मज्योतिःस्वरूपं च भक्तानुग्रहविग्रहम्।।
विषयाणां विभेदेन बिभ्रन्तं बहुरूपकम्।
जलरूपमग्निरूपमाकाशरूपमीश्वरम्।।
वायुरूपं चन्द्ररूपं सूर्यरूपं महत्प्रभुम्।
आत्मनः स्वपदं दातुं समर्थमवलीलया।।

भक्तजीवनमीशं च भक्तानुग्रहकातरम्।
वेदा न शक्ता यं स्तोतुं किमहं स्तौमि तं प्रभुम्।।
अपरिच्छिन्नमीशानमहो वाङ्मनसोःपरम्।
व्याघ्रचर्माम्बरधरं वृषभस्थं दिगम्बरम्।
त्रिशूलपट्टिशधरं सस्मितं चन्द्रशेखरम्।
इत्युक्त्वा स्तवराजेन नित्यं बाणः सुसंयतः।।
प्राणमत् शंकरं भक्त्या दुर्वासाश्च मनीश्वरः।। (ब्रह्मखण्ड 19/56-65)

सच्चिदानन्दस्वरूप शिव को नमस्कार है।

बाणासुर बोला – जो देवताओं के सारतत्त्वस्वरूप और समस्त देवगणों के स्वामी हैं, जिनका वर्ण नील और लोहित है, जो योगियों के ईश्वर, योग के बीज तथा योगियों के गुरु के भी गुरु हैं, उन भगवान् शिव की मैं वन्दना करता हूँ। जो ज्ञानानन्दस्वरूप, ज्ञानरूप, ज्ञानबीज, सनातन देवता, तपस्या के फलदाता तथा सम्पूर्ण सम्पदाओं को देनेवाले हैं, उन भगवान् शंकर को मैं प्रणाम करता हूँ। जो तपःस्वरूप, तपस्या के बीज, तपोधनों के श्रेष्ठ धन, वर, वरणीय, वरदायक तथा श्रेष्ठ सिद्धगणों के द्वारा स्तवन करने योग्य हैं, उन भगवान् शंकर को मैं नमस्कार करता हूँ। जो भोग और मोक्ष के कारण, नरकसमुद्र से पार उतारनेवाले, शीघ्र प्रसन्न होनेवाले, प्रसन्नमुख तथा करुणासागर हैं, उन भगवान् शिव को मैं प्रणाम करता हूँ। जिनकी अङ्गकान्ति हिम, चन्दन, कुन्द, चन्द्रमा, कुमुद तथा श्वेत कमल के सदृश उज्ज्वल है, जो ब्रह्मज्योतिस्वरूप तथा भक्तों पर अनुग्रह करने के लिये विभिन्न रूप धारण करनेवाले हैं, उन भगवान् शंकर को मैं प्रणाम करता हूँ। जो विषयों के भेद से बहुतेरे रूप धारण करते हैं, जल, अग्नि, आकाश, वायु, चन्द्रमा और सूर्य जिनके स्वरूप हैं, जो ईश्वर एवं महात्माओं के प्रभु हैं और लीलापूर्वक अपना पद देने की शक्ति रखते हैं, जो भक्तों के जीवन हैं तथा भक्तों पर कृपा करने के लिये कातर हो उठते हैं, उन ईश्वर को मैं नमस्कार करता हूँ। वेद भी जिनका स्तवन करने में असमर्थ हैं, जो देश, काल और वस्तु से परिच्छिन्न नहीं हैं तथा मन और वाणी की पहुँच से परे हैं, उन परमेश्वर प्रभु की मैं क्या स्तुति करूँगा। जो बाघम्बरधारी अथवा दिगम्बर हैं, बैल पर सवार हो त्रिशूल और पट्टिश धारण करते हैं, उन मन्द मुस्कान की आभा से सुशोभित मुखवाले भगवान् चन्द्रशेखर को मैं प्रणाम करता हूँ।

यों कहकर बाणासुर प्रतिदिन संयमपूर्वक रहकर स्तवराज से भगवान् की स्तुति करता था और भक्तिभाव से शंकरजी के चरणों में मस्तक झुकाता था। मुनीश्वर दुर्वासा भी ऐसा ही करते थे।

वसिष्ठजी ने पूर्वकाल में त्रिशूलधारी शिवजी के इस परम महान् अद्‌भुत स्तोत्र का उपदेश गन्धर्वराज को दिया था। जो मनुष्य भक्तिभाव से इस परम पुण्यमय स्तोत्र का पाठ करता है, वह निश्चय ही सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान का फल पा लेता है। जो संयमपूर्वक हविष्य का भोजन करते हुए जगद्‌गुरु शंकर को प्रणाम करके एक वर्षतक इस स्तोत्र को सुनता है, वह पुत्रहीन हो तो अवश्य ही पुत्र प्राप्त कर लेता है। जिसको गलित कोढ़ का रोग हो या उदर में बड़ा भारी शूल उठता हो, वह यदि एक वर्षतक इस स्तोत्र को सुने तो अवश्य ही उस रोग से मुक्त हो जाता है। जो कैद में पड़कर शान्ति न पाता हो, वह भी एक मासतक इस स्तोत्र को श्रवण करके अवश्य ही बन्धन से मुक्त हो जाता है। जिसका राज्य छिन गया हो, ऐसा पुरुष यदि भक्तिपूर्वक एक मासतक इस स्तोत्र का श्रवण करे तो अपना राज्य प्राप्त कर लेता है। एक मासतक संयमपूर्वक इसका श्रवण करके निर्धन मनुष्य धन पा लेता है। राजयक्ष्मा से ग्रस्त होने पर जो आस्तिक पुरुष एक वर्षतक इसका श्रवण करता है, वह भगवान् शंकर के प्रसाद से निश्चय ही रोगमुक्त हो जाता है। जो सदा भक्तिभाव से इस स्तवराज को सुनता है उसके लिये तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं रह जाता। उसको कभी अपने बन्धुओं से वियोग का दुःख नहीं होता। वह अविचल एवं महान् ऐश्वर्य का भागी होता है, इसमें संशय नहीं है। जो पूर्ण संयम से रहकर अत्यन्त भक्तिभाव से एक मासतक इस स्तोत्र का श्रवण करता है, वह यदि भार्याहीन हो तो अति विनयशील, सती-साध्वी सुन्दरी भार्या पाता है। जो महान् मूर्ख और खोटी बुद्धि का है, ऐसा मनुष्य यदि इस स्तोत्र को एक मासतक सुनता है तो वह गुरु के उपदेशमात्र से बुद्धि और विद्या पाता है। जो प्रारब्ध-कर्म से दुःखी और दरिद्र मनुष्य भक्तिभाव से इस स्तोत्र का श्रवण करता है, उसे निश्चय ही भगवान् शंकर की कृपा से धन प्राप्त होता है। जो प्रतिदिन तीनों संध्याओं के समय इस उत्तम स्तोत्र को सुनता है, वह इस लोक में सुख भोगता, परम दुर्लभ कीर्ति प्राप्त करता और नाना प्रकार के धर्म का अनुष्ठान करके अन्त में भगवान् शंकर के धाम को जाता है, वहाँ श्रेष्ठ पार्षद होकर भगवान् शिव की सेवा करता है। (ब्रह्मवैवर्त महापुराण, ब्रह्मखण्ड अ.-19)

(उपर्युक्त कवच एवं स्तोत्र गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त ब्रह्मवैवर्तपुराणांक पर आधारित है। आनंदाश्रम द्वारा 1935 में प्रकाशित 'ब्रह्मवैवर्तपुराणम्' में भी उपर्युक्त कवच एवं स्तोत्र के समान पाठ मिलते हैं।)

❀❀❀❀❀❀